

जलियाँवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919) : कारण और प्रभाव

[S samanyagyan.com/hindi/gk-jallianwala-bagh-massacre-history](http://samanyagyan.com/hindi/gk-jallianwala-bagh-massacre-history)

आखिर क्या था जलियाँवाला बाग हत्याकांड?

दिनांक 13 अप्रैल, 1919 को दो राष्ट्रवादी नेताओं, सत्य पाल और डॉ सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में जलियाँवाला बाग (अमृतसर) में कम से कम 10,000 पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की भीड़ एकत्रित हुई, जो लगभग पूरी तरह से दीवारों से घिरी हुई थी और केवल एक निकास था। सैन्य अधिकारी, जनरल डायर (Michael Francis O'Dwyer) और उसके सैनिक पहुंचे और निकास द्वार को बंद कर दिया। और जनरल डायर ने लोगों को चेतावनी दिए बिना ही अपने सैनिकों को दस मिनट तक निहत्थे भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। और गोलियाँ समाप्त होने तक चलती रहीं।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड में कितने लोग मारे गए?

जलियाँवाला बाग नरसंहार के दौरान हुई मौतों की संख्या पर कोई आधिकारिक संख्या नहीं थी। अंग्रेजों की आधिकारिक पूछताछ में पता चला कि 379 मौतें हुईं लेकिन कांग्रेस के अनुमान के अनुसार उन दस मिनटों में लगभग 1000 लोग मारे गए और लगभग 2000 घायल हुए। गोली के निशान अभी भी जलियाँवाला बाग की दीवारों पर देखे जा सकते हैं जो अब एक राष्ट्रीय स्मारक है।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड से जनरल डायर पर क्या असर पड़ा?

जलियाँवाला बाग नरसंहार एक परिकल्पित क्रिया थी और डायर ने गर्व के साथ घोषणा की कि उसने लोगों पर 'नैतिक प्रभाव' पैदा करने के लिए ऐसा किया। उसने अपना मन बना लिया था कि अगर क्रांतिकारी अपनी बैठक जारी रखेंगे तो वे सभी पुरुषों को गोली मार देंगे। जनरल डायर इस बात का कोई पछतावा नहीं था। जब वह इंग्लैंड गए तो कुछ अंग्रेजों ने उन्हें सम्मानित करने के लिए धन एकत्र किया। लेकिन अन्य लोग इस क्रूरता से भरे नरसंहार पर हैरान थे और उन्होंने जांच की मांग भी की। एक ब्रिटिश अखबार ने इसे आधुनिक इतिहास के खूनी नरसंहारों में से एक कहा।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड से कांग्रेस पर क्या असर पड़ा?

नरसंहार ने स्वतंत्रता के संघर्ष के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ दिया। दिसंबर 1919 में, अमृतसर में एक कांग्रेस अधिवेशन आयोजित किया गया। और इसमें किसानों सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। यह स्पष्ट हुआ कि अंग्रेजों की क्रूरताओं ने केवल आग में ईंधन डालने का काम किया था और लोगों के स्वतंत्रता पाने की दृढ़ संकल्प को उनके खिलाफ लड़ने के लिए मजबूत बनाया।

डॉ. सत्य पाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू कौन थे?

अमृतसर के कांग्रेस नेता डॉ सैफुद्दीन किचलू और डॉ सत्यपाल विरोध प्रदर्शनों में सबसे आगे थे। सत्यपाल (जन्म: 11 मई 1885) पंजाब, ब्रिटिश भारत में एक चिकित्सक और राजनीतिक नेता थे, जिन्हें 10 अप्रैल 1919 को सैफुद्दीन किचलू के साथ गिरफ्तार किया गया था।

सैफुद्दीन किचलू (जन्म: 15 जनवरी 1888) एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, बैरिस्टर, राजनीतिज्ञ और पाकिस्तान आंदोलन के आलोचक थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य, वे पहले पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रमुख और बाद में 1924 में AICC के महासचिव बने।

रवींद्रनाथ टैगोर का इस नरसंहार से क्या सम्बन्ध है?

रवींद्रनाथ टैगोर को अंग्रेजों (King George-V) से 1915 में 'Knighthood' की उपाधि मिली थी। इस नरसंहार के बाद उन्होंने अपना 'नाइटहुड' उपाधि को त्याग दिया था। उन्होंने वायसरॉय (Lord Chelmsford Lord Chelmsford) को अपने पत्र में लिखा, और घोषणा की:

The time has come when the badges of honour make our shame glaring in their incongruous context of humiliation and I for my part wish to stand shorn of all special distinctions, by the side of those of my countrymen, who for their so-called insignificance, are liable to suffer a degradation not fit for human beings.

वह समय आ गया है जब सम्मान के बिल्ले हमारी अपमानजनक संदर्भ में शर्म की बात करते हैं और मैं अपने हिस्से के लिए अपने सभी देशवासियों के पक्ष में सभी विशेष भेदों के साथ खड़ा होना चाहता हूँ, जो उनके तथाकथित अपमान के लिए, एक पीड़ित का सामना करने के लिए उत्तरदायी हैं जो मनुष्य के लिए सही नहीं हैं।

जनरल डायर को किसने और कब मारा?

लगभग 21 साल बाद, 13 मार्च 1940 को, एक भारतीय क्रांतिकारी, उधम सिंह ने माइकल ओ'डायर की गोली मारकर हत्या कर दी, जो जलियावाला बाग हत्याकांड के समय पंजाब के उपराज्यपाल थे। इस हत्याकांड से भारतीय लोगों में रोष था और सरकार ने और क्रूरता के साथ जवाब दिया।